अलंकार

अलंकार के भेद उपभेद	पहचान	उदाहरण
1. शब्दालंकार	वर्णों, शब्दों के कारण सौन्दर्य	
(i) अनुप्रास	वर्ण की आवृत्ति	1. तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए ('त' वर्ण की आवृत्ति) 2. कालिंदी कूल कदंब की डारन ('क' वर्ण की आवृत्ति)
(ii) यमक	किसी शब्द की आवृत्ति हो लेकिन अर्थ में भिन्नता हो	1. काली घटा का घमण्ड घटा (घटा-घटाएँ, कम होना) 2. है कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लीन्ही। (बेनी—कवि का नाम, चोटी)
2. अर्थालंकार	अर्थ के कारण सौन्दर्य	
(i) उपमा	दो भिन्न वस्तुओं में तुलना	1. निर्मल तेरा नीर अमृत सम उत्तम है। (नीर की अमृत से तुलना) 2. नागिन-सा रूप तेरा। (नागिन के रूप से तुलना)
(ii) रूपक	उपमेय और उपमान में अभिन्नता या अभेद	1. चरण कमल बंदौ हरिराई (चरण और कमल में अभिन्नता) 2. मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों (चन्द्र और खिलौना में अभिन्नता)
(iii) अतिश्योक्ति	बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना	1. तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान मृतक में भी डाल देगी जान। (दंतुरित मुस्कान का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन) 2. काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन। (पराक्रम का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन)
(iv) मानवीकरण	प्राकृतिक वस्तुओं को मानवीकृत करना	1. मेघ आए बन-ठन के संवर के (मेघ द्वारा सजना-संवरना) 2. अम्बर पनघट में डुबो रही, ताराघट उषा नागरी (उषा का स्त्री रूप में मानवीकरण)

अध्याय 7 अलंकार

स्मरणीय बिंदु

अलंकार— अलंकार का शाब्दिक अर्थ है— आभूषण। जिस प्रकार आभूषण नारी की सुन्दरता बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकार से कविता की शोभा बढ़ती है अर्थात् शब्द तथा अर्थ की जिस विशेषता से काव्य का शृंगार होता है, उसे अलंकार कहते हैं। अलंकार शास्त्र में आचार्य भामह ने इसका विस्तृत वर्णन किया है। वे अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक कहे जाते हैं।

अलंकार के भेद—अलंकार को मुख्यत: दो भागों में बाँटा जाता है— **(i)** शब्दालंकार **(ii)** अर्थालंकार

1. शब्दालंकार—जो अलंकार शब्दों के माध्यम से काव्य को अलंकृत करते हैं, वे शब्दालंकार कहलाते हैं। ये वर्णगत, शब्दगत या वाक्यगत होते हैं।

शब्दालंकार के भेद—शब्दालंकारों के मुख्यत: तीन भेद होते हैं—

(अ) अनुप्रास

(ब) यमक

(स) श्लेष

(क) श्लेष अंलकार

(क) श्लेष अलंकार—श्लेष का अर्थ होता है चिपकना। जहाँ एक शब्द में अनेक अर्थ गुंथे होते हैं, वहाँ श्लेष अंलकार होता है। काव्य में शोभा या चमत्कार उत्पन्न करने वाले तत्त्व अलंकार कहलाते हैं।

उदाहरण 1.

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

यहाँ पानी का अर्थ विनम्रता, चमक तथा जल से है, जो चून से जुड़ा है।

उदाहरण 2.

चरण धरत चिन्ता करत, चितवत चारहु ओर।
सुबरन को खोजत फिरत, कवि, व्याभिचारी, चोर।।

यहाँ सुबरन का अर्थ सुन्दर शरीर तथा सोना है।

उदाहरण 3.

मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई,
जा तन की झाई परै स्याम हरित दुति होई।

यहाँ हरित का अर्थ हरा रंग तथा हरियाली से है।

2. अर्थालंकार — अर्थालंकार की निर्भरता शब्द पर न होकर शब्द के अर्थ पर आधारित होती है अर्थात् जब किसी वाक्य का सौन्दर्य उसके अर्थ पर आधारित होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकार के भेद—अर्थालंकार के मुख्यत: पाँच भेद होते हैं—

(क) अतिशयोक्ति **(ख)** मानवीकरण **(ग)** उत्प्रेक्षा अलंकार।

(क) अतिशयोक्ति अलंकार—जब किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाए तो अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण—हनुमान की पूँछ में, लग न पाई आग।

लंका सिगरी जरि गई, गए निशाचर भाग॥

इस पद्यांश में हनुमान की पूँछ में आग लगने के पहले ही सारी लंका का जलना और राक्षसों के भाग जाने का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है, अत: अतिशयोक्ति अलंकार है।

(ख) मानवीकरण अलंकार—जहाँ कवि काव्य में जड़ पदार्थों, भाव या प्रकृति को मानवीकृत कर दे, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। जैसे—

(i) बीती विभावरी जाग री।

अंबर पनघट में डुबो रहीं, ताराघट उषा नागरी।

यहाँ उषा (प्रात:) का मानवीकरण कर दिया गया है। उसे स्त्री रूप में वर्णित किया गया है, अत: मानवीकरण अलंकार है।

(ii) तुम भूल गए क्या मातृ प्रकृति को

तुम जिसके आँगन में खेले-कूदे,

जिसके आँचल में सोए जागे।

यहाँ प्रकृति को माता के रूप में मानवीकृत किया गया है, अत: मानवीकरण अलंकार है।

(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार:-काव्य में जहाँ उपमान के न रहने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है, अर्थात् अप्रस्तुत को ही प्रस्तुत मान लिया जाता है वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। काव्य में जहाँ **मनु, मानो, जनु, जानो** का प्रयोग होता है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण 1.

ले चला साथ मैं तुझे कनक।

ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण।।

यहाँ कनक (धतूरे) को सोना मान लिया गया है।

उदाहरण 2.

उस वक्त मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा।

मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।।

यहाँ अर्जुन के क्रोध से काँपते शरीर (उपमेय) की कल्पना हवा के जोर से जागते सागर (उपमान) से की गई है।

उदाहरण 3.

नेत्र मानो कमल हैं।

यहाँ नेत्र (उपमेय) की तुलना कमल (उपमान) से की गई है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. पानी गए न अबरै मोती मानुष चून।

(क) रूपक (ख) श्लेष

(ग) मानवीकरण (घ) उपमा

प्रश्न 2. मंमन को देखि पट देति बार-बार है।

(क) रूपक (ख) उपमा

(ग) श्लेष (घ) मानवीकरण

प्रश्न 3. दुलरा देना, बहला देना, यह तेरा शिशु जग है उदास।

(क) अनुप्रास (ख) श्लेष

(ग) मानवीकरण (घ) उपमा

प्रश्न 4. दिवसावसान का समय मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुन्दरी परी-सी धीरे-धीरे-धीरे।
उक्त पद्य में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) रूपक और मानवीकरण

(ग) श्लेष (घ) यमक

प्रश्न 5. संदेसनि मधुवन-कूप भरे। उक्त पद्य में कौन-सा अलंकार विद्यमान है?

(क) श्लेष (ख) अतिश्योक्ति अलंकार

(ग) यमक (घ) उपमा

प्रश्न 6. देख लो साकेत नगरी है यही
स्वर्ग से मिलने गगन को जा रही

(क) अतिश्योक्ति (ख) अनुप्रास

(ग) यमक (घ) उत्प्रेक्षा

उत्तर—1. (ख), **2.** (ग), **3.** (ग), **4.** (ख), **5.** (ख), **6.** (क)।

❐❐

अध्याय

5 स्ववृत्त लेखन

स्ववृत्त लेखन

पाठ्यक्रम: (उपलब्ध रिक्त के लिए स्ववृत्त लेखन।)

- स्पष्ट, संपूर्ण व व्यवस्थित
- नाम, जन्मतिथि, वर्तमान पता, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव, अभिरूचियों, आत्मकथा, दूरभाष आदि का उल्लेख (परीक्षा में गोपनीयता का निर्वाह अपेक्षित)
- अन्य विशेष जानकारी। योग्यता आदि

प्रस्तावना

स्ववृत्त लेखन स्वम् के द्वारा बनाया गया प्रारूप होता है, जिसे विज्ञापन के प्रत्युत्तर में आवेदन पत्र के साथ भेजा जाता है। अपने बारे में संक्षिप्त रूप से आवश्यक सूचना प्रदान करना ही स्ववृत्त लेखन कहलाता है। इस पत्र में व्यक्ति पद से सम्बन्धित अपनी योग्यताओं, कार्यानुभव, उपलब्धियों को प्रस्तुत करता है। जीविकोपार्जन के अतिरिक्त भी अन्य उद्देश्यों के लिये स्ववृत्त लेखन किया जाता है। जैसे विवाह हेतु भी स्ववृत्त लेखन किया जाता है। प्रत्येक कार्य के लिये स्ववृत्त लेखन की रचना भिन्न प्रकार से होती है। नौकरी के लिये स्ववृत्त लेखन में शैक्षणिक योग्यता और व्यावहारिक अनुभव की विस्तृत जानकारी देना आवश्यक होता है। जबकि विवाह संबंधी स्ववृत्त लेखन में शैक्षणिक योग्यता की विस्तृत जानकारी के अतिरिक्त परिवार की पृष्ठभूमि की जानकारी देना आवश्यक होता है।

सही और व्यवस्थित स्ववृत्त लेखन व्यक्ति को नौकरी व अन्य कार्य हेतु आवश्यक होता है।

प्रश्न 1. सब्जेक्ट एक्सपर्ट पद के लिए स्ववृत्त लेखन लिखिए।

उत्तर— सब्जेक्ट एक्सपर्ट पद के लिए स्ववृत्त लेखन

सेवा में,

मैनेजर

ओसवाल पब्लिकेशन

राजा की मंडी, आगरा

मान्यवर,

मुझे यह ज्ञात हुआ है कि आपके संस्थान में सब्जेक्ट एक्सपर्ट पद हेतु कुछ रिक्तियाँ आबंटित हुई हैं। इस सन्दर्भ में विचारार्थ मेर स्ववृत्त प्रस्तुत है।

स्ववृत्त

रुचि :

ग्रेजुएशन के समय से ही हिन्दी साहित्य में मेरी रुचि रही है। कहानी विधा मुझे अत्यन्त प्रिय है। नई कहानी आंदोलन का मैंने गहन अध्ययन किया है। मुक्तिबोध के रचना कर्म को युगीन परिस्थितियों में समझने का सचेत प्रयास किया है।

शैक्षिक विवरण :	**बर्ष**
⇨ किसान इण्टर कॉलेज बभनान बस्ती	
हाईस्कूल	2003
द्वितीय श्रेणी : 54%	
⇨ किसान इण्टर कॉलेज बभनान बस्ती	
इण्टरमीडिएट	2005
प्रथम श्रेणी : 60%	
⇨ अवध विश्वविद्यालय	
बी.ए. : हिन्दी, भूगोल व प्राचीन इतिहास में	2008
प्रथम श्रेणी : 61%	
⇨ इलाहाबाद विश्वविद्यालय	
एम. ए. : हिन्दी में	2012
प्रथम श्रेणी	
⇨ यू.जी.सी	
जे.आर.एफ.	2013
⇨ दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट	
पीएच.डी	2021

उपलब्धियाँ तथा पुरस्कार :

- ⇨ राष्ट्रीय सेवा योजना में दो वर्ष (240 घंटे) सत्र 2005-06 तथा 2006-07 में सक्रिय सहभागिता की।
- ⇨ ग्रेजुएशन के दौरान अपने कॉलेज की कबड्डी टीम का प्रतिनिधित्व किया।
- ⇨ बर्तोल्ड ब्रेडल के नाटक 'अपवाद ओर नियम' में भाग लिया।

अरविन्द तिवारी
32, पायल एन्क्लेव
जीवन ज्योति, दयालबाग
आगरा, 202005
मो. 6390909028
मेल :
atiwari896@gmail.com

प्रश्न 2. सहायक अध्यापक पद के लिए स्ववृत्त लेखन लिखिए।

उत्तर— सहायक अध्यापक पद के लिए स्ववृत्त लेखन

सेवा में,

विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग

आ. नरेन्द्र देव किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बभनान गोण्डा

मान्यवर,

मुझे यह ज्ञात हुआ है कि आपके विभाग में 'सहायक अध्यापक' पद हेतु कुछ रिक्तियाँ आबंटित हुई हैं। इस सन्दर्भ में विचारार्थ मेरा स्ववृत्त प्रस्तुत है।

स्ववृत्त

विशेष रुचि :

ग्रेजुएशन के समय से ही हिन्दी साहित्य में मेरी रुचि रही है। कहानी विधा मुझे अत्यन्त प्रिय है। नई कहानी आंदोलन का मैंने गहन अध्ययन किया है। मुक्तिबोध के रचना कर्म को युगीन परिस्थितियों में समझने का सचेत प्रयास किया है।

शैक्षिक विवरण :	**बर्ष**
⇨ किसान इण्टर कॉलेज बभनान बस्ती	
हाईस्कूल	2003
द्वितीय श्रेणी : 54%	
⇨ किसान इण्टर कॉलेज बभनान बस्ती	
इण्टरमीडिएट	2005
प्रथम श्रेणी : 60%	
⇨ अवध विश्वविद्यालय	
बी.ए. : हिन्दी, भूगोल व प्राचीन इतिहास में	2008
प्रथम श्रेणी : 61%	
⇨ इलाहाबाद विश्वविद्यालय	
एम. ए. : हिन्दी में	2012
प्रथम श्रेणी	
⇨ यू.जी.सी	
जे.आर.एफ.	2013
⇨ दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट	
पीएच.डी	2021

उपलब्धियाँ तथा पुरस्कार :

⇨ राष्ट्रीय सेवा योजना में दो वर्ष (240 घंटे) सत्र 2005-06 तथा 2006-07 में सक्रिय सहभागिता की।

⇨ ग्रेजुएशन के दौरान अपने कॉलेज की कबड्डी टीम का प्रतिनिधित्व किया।

⇨ बर्तोल्ड ब्रेढल के नाटक 'अपवाद और नियम' व सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक 'बकरी' में सहभागिता की।

रुचि :

⇨ हिन्दी साहित्य का अध्ययन और कविता लेखन।

⇨ कहानी, उपन्यास में विशेष रुचि।

अरविन्द तिवारी
32, पायल एन्क्लेव
जीवन ज्योति, दयालबाग
आगरा, 202005
मो. 6390909028
मेल :
atiwari896@gmail.com

प्रश्न 3. हिन्दी टाइपिस्ट पद हेतु स्ववृत्त लेखन लिखिए।

उत्तर— हिन्दी टाइपिस्ट पद हेतु स्ववृत्त लेखन

सेवा में,

मैनेजर

हिन्दी विभाग

राजीव गाँधी कम्प्यूटर साक्षरता मिशन

महोदय,

मुझे यह ज्ञात हुआ है कि आपके विभाग में 'कम्प्यूटर ऑपरेटर' का पद रिक्त है। इस सन्दर्भ में विचारार्थ मेरा स्ववृत्त प्रस्तुत है।

बचपन से ही कम्प्यूटर में मेरी गहरी रुचि रही है।

स्ववृत्त

शैक्षिक विवरण :	**बर्ष**
⇨ किसान इण्टर कॉलेज बभनान बस्ती	
हाईस्कूल	2003
द्वितीय श्रेणी : 54%	
⇨ किसान इण्टर कॉलेज बभनान बस्ती	
इण्टरमीडिएट	2005
प्रथम श्रेणी : 60%	
⇨ अवध विश्वविद्यालय	
बी.ए. : हिन्दी, भूगोल व प्राचीन इतिहास में	2008
प्रथम श्रेणी : 61%	
⇨ 'O' लेबल कम्प्यूटर में	2010
भारत भारती कम्प्यूटर संस्थान	

रुचि :

⇨ कम्प्यूटर की बारीकी को समझना।

⇨ कहानी पढ़ना।

अरविन्द तिवारी
32, पायल एन्कलेव
जीवन ज्योति, दयालबाग
आगरा, 202005
मो. 6390909028
मेल: atiwari896@gmail.com

❐❐

अध्याय 6 ई-मेल लेखन

प्रस्तावना

ई-मेल या इलेक्ट्रॉनिक मेल, इन्टरनेट के माध्यम से, पत्र भेजने का एक तरीका है। मेल शब्द का अर्थ होता है संदेश, अर्थात् इससे हम यह समझ सकते हैं कि यह एक प्रकार की चिट्ठी या संदेश होता है, जब इस संदेश या चिट्ठी को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से भेजा जाता है तो उसे ई-मेल (e-mail) कहते हैं। ई-मेल के द्वारा हम विश्व के किसी भी कोने में में बैठे इंसान तक सिर्फ कुछ सेकण्ड में ही अपना संदेश भेज सकते हैं और अन्य इंसान द्वारा भेजा संदेश इलेक्ट्रॉनिक रूप में पा सकते हैं।

ई-मेल के साथ हम अन्य फाइलें जैसे—फोटो या डॉक्युमेन्ट्स भी जोड़कर भेज सकते हैं।

प्रश्न 1. ट्यूशन टीचर की आवश्यकता हेतु एक ई-मेल लिखिए।

उत्तर—

From : < madhu15@gmail.com
To : < mal@tutorial.com>
Cc : < hr@tutorial.com> दिनांक : 23-04-22

विषय : ट्यूशन टीचर की आवश्यकता हेतु जानकारी

महोदय,

मैं सपना कुमारी बारहवीं कक्षा की विद्यार्थी हूँ। मुझे जानकारी प्राप्त हुई कि आप विभिन्न विषयों की ट्यूशन की जानकारी उपलब्ध कराते हैं। मुझे अपने लिए एक गणित विषय की ट्यूशन की आवश्यकता है।

आपसे अनुरोध है कि मुझे गणित विषय का ट्यूशन उपलब्ध कराने में सहायता करें।

धन्यवाद
सपना कुमारी
कक्षा—12th
मो. 8447070356

प्रश्न 2. किसी विषय के प्रशिक्षण के लिए ई-मेल करें।

उत्तर—

From : madhu14@gmail.com
To : hr14@gmail.com
Cc : prt@gmail.com दिनांक : 23-04-22

विषय : कम्प्यूटर विषय के 10 दिवसीय प्रशिक्षण हेतु जानकारी

अभिवादन,

आपका चयन कम्प्यूटर विषय के 10 दिवसीय प्रशिक्षण के लिए हुआ है। आपको प्रशिक्षण अवधि के लिए भुगतान किया जाएगा। आपका प्रशिक्षण मंगलवार 15 अप्रैल, 2022 से शुरू होगा। जब आप प्रशिक्षण के लिए आएँ तो अपने साथ नीचे दिए गए दस्तावेजों की प्रतियाँ लेकर आएँ। यह दस्तावेज आपको विभाग में जमा करने होंगे।

धन्यवाद **आवश्यक दस्तावेज**
Maduri vaish पासबुक
Mob. 8442010306 आधार कार्ड
पेन कार्ड

प्रश्न 3. किसी पाठ्यक्रम विवरण के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए ई-मेल करें।

उत्तर—

From : rcp@gmail.com
To : abc1462@gmail.com
Cc : xyz1442@gmail.com दिनांक : 23-04-22

विषय : पाठ्यक्रम विवरण के सम्बन्ध में

माननीय महोदय,

मैं माधुरी वैश्य दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में हिन्दी विषय की शोध छात्रा हूँ। मैं आपके संस्थान से कम्प्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा करना चाहती हूँ। पाठ्यक्रम से सम्बन्धित जानकारी हेतु आप मुझे पाठ्यक्रम की विवरणिका की एक प्रति भेज दीजिए।

आपके इस सहयोग से मुझे पाठ्यक्रम को समझने में सहायता मिलेगी।

धन्यवाद
शोधार्थी
माधुरी वैश्य
दयालबाग एजुकेशनल कॉलेज
आगरा

प्रश्न 4. दूरदर्शन अधिकारी को कार्यक्रमों में सुधार हेतु सुझाव के लिए ई-मेल करें।

उत्तर—

From : rcp@gmail.com
To : abc1562@gmail.com
Cc : xyz1432@gmail.com दिनांक : 22-04-22

विषय : दूरदर्शन कार्यक्रमों हेतु सुझाव

महोदय,

दूरदर्शन देश के लाखों लोगों के मनोरंजन व ज्ञान का स्रोत है, किन्तु बच्चों और युवा वर्ग के लिए जो कार्यक्रम ज्ञानवर्धक हो सकते हैं, ऐसे कार्यक्रम दूरदर्शन पर न के बराबर दिखाये जाते हैं। यदि रविवार को प्रातः या दोपहर के समय विज्ञान या जनरल नॉलेज से सम्बन्धित कोई कार्यक्रम प्रसारित किया जाए तो यह विद्यार्थियों के लिए लाभदायक व रुचिकर सिद्ध होगा।

अतः आपसे अनुरोध है कि विद्यार्थी व युवा वर्ग को ध्यान में रखते हुए दूरदर्शन पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का प्रसारण करें।

धन्यवाद

माधुरी

Mob : 8447070356

प्रश्न 5. किसी कॉलेज में हिन्दी विषय में सहायक अध्यापक के रिक्त पद की जानकारी के लिए ई-मेल करें।

उत्तर—

From : rcp@gmail.com

To : abc1462@gmail.com

Cc : xyz1952@gmail.com दिनांक : 22-04-22

विषय : हिन्दी विषय में सहायक अध्यापक के रिक्त पद की जानकारी

कला संकाय प्रमुख

डी.ई.आई, दयालबाग

आगरा—282005

माननीय महोदय,

सादर सूचित करना चाहती हूँ कि मैं माधुरी वैश्य हिन्दी विभाग की शोध छात्रा हूँ। मेरी पी.एच.डी. समाप्त होने की ओर अग्रसर है। महोदय हिन्दी विभाग में सहायक अध्यापक के कुल कितने पद रिक्त हैं? कृपया जानकारी प्रदान करें।

आपसे सहयोग की अपेक्षा में

धन्यवाद

शोधार्थी

माधुरी वैश्य

हिन्दी विभाग

कला संकाय

रजिस्ट्रेशन क्रमांक : 184186

माधुरी

Mob : 8447070356

❑❑

OSWAAL BOOKS® LEARNING MADE SIMPLE